Dr. Madan Paswan, History.
Class: B.A. Part - II (Hons.) P. III
Topic: Iqta System....

Lecture No. 18
Date: 14.10.2020
Continue Lecture...

(iv) प्रदत्त भू-राजस्व में से अभीष्ट संख्या में सैनिक रखना।

इस प्रकार मुक्ता का पहला कर्तव्य सुल्तान की सेवा के लिए सैनिकों की टुकड़ी तैयार रखना तथा आन्तरिक प्रशासन का निरीक्षण करना था। वे इक्ता द्वारा राजस्व वसूली की जाँच तथा निरीक्षण करते थे। आंतरिक व्यापार को भी प्रोत्साहन दिया जाता था। मुक्ता या वजहदार अपनी इक्ता के अधीन खेती के विकास को भी प्रोत्साहन देते थे। नई भूमि पर खेती करने के लिए कृषकों को ऋण दिये जाते थे। परन्तु प्रांत की न्याय व्यवस्था पर मुक्ता के नियंत्रण संबंधी कार्यों का संकेत नहीं मिलता है।

विद्वानों, सैय्यदों तथा धार्मिक व्यक्तियों को निर्वाह के लिए अनुदान में दी गई भूमि को छोड़कर इक्ता पर अमीरों की नियुक्ति होती थी। मुक्ताओं के हिसाब-किताब की जाँच पड़ताल के लिए केन्द्रों से लेखा परीक्षक भेजा जाता था।

इल्तुतमिश के काल में इक्तादारों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए उन्हें बारबार स्थानांतरित किया जाता था। किन्तु इल्तुतमिश के बाद इक्ता व्यवस्था में ही अंतर्निहित हानिकारक तत्वों ने इस प्रणाली को अव्यवस्थित कर दिया।

इक्ता व्यवस्था को शासन के केन्द्रीकरण की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रयुक्त किया गया था। लेकिन यही प्रथा विकेंद्रीकरण तथा विघटन का कारण बन गई।

इक्ता का स्वरूप :

इक्ता प्रणाली के स्वरूप के विषय में कुछ विद्वानों का कहना है कि इसकी प्रकृति सामंती थी। इसका आधार है कि सल्तनत पद-सोपानिक अधिकार की यूरोपीय सामन्ती समाज से तुलना करना जिसमें सर्वोच्च पद पर सुल्तान, उसके नीचे बड़े मुक्ता, प्रान्तीय गवर्नर इसके

Contd...

नीचे छोटे सैनिक इक्तादार और अन्त में खूत, मुकद्दम, चौधरी आदि स्थानीय स्तर के मध्यवर्ती लोग थे। लेकिन इक्ता सामन्ती संस्था नहीं थी क्योंकि राज्य और मुक्ता का सबसे छोटे पदाधिकारी के बीच सीधा संबंध था। पुनः राज्य ने कभी भी मुक्ता को पूर्वत भूमि के साथ मूल अधिकार हस्तांतरित नहीं किया।

Continue ...

— Dr. Madan Paswan, Dept. of History.
Assistant Professor, D. B. College Jaynagar.